से अपने लिए सम्मान अर्जित कर लिया है।

☞11. भारत की छः ऋतुएँ [Imp.]

विचार-बिंदु– • भारत का षड्ऋतु-चक्र • ऋतुराज वसंत • तपता ग्रीष्म • रिमझिम करती वर्षाऋतु • सुहानी शरद् • सी-सी करता हेमंत • शिशिर अर्थात् पतझड़

भारतवर्ष षड्ऋतुओं का देश है। वसंत ऋतुराज माना जाता है। इस ऋतु में न ठंड होती है, न गर्मी, बल्कि एक गुनगुनी मधुरता सारे वातावरण पर छाई रहती है। धरती स्वच्छता, हरियाली और फूलों की चटक तथा महक से नहा उठती है। होली और वसंत पंचमी जैसे मस्त त्योहार इसी काल में मनाए जाते हैं। अगले दो मास ग्रीष्म के होते हैं। सारी पृथ्वी उजली सफेद धूप में धू-धू करके जलती है। इस काल में सब प्राणी पानी और छाया की तलाश में रहते हैं। ग्रीष्म के बाद आता है–रिमझिम करता वर्षाकाल। धरती की जलन शांत होती है। नदी-नालों में पानी उमड़ने लगता है। वृक्षों के पत्ते हरे हो जाते हैं। वर्षा के बाद शरद् ऋतु आती है। यह काल भी वसंत की भाँति प्रिय और मधुर होता है। इसमें मौसम सुहावना और साफ-स्वच्छ होता है। शरद् के बाद हेमंत के ठिठुरते मास आते हैं–मार्गशीर्ष और पौष। इस काल में भारत में कड़ाके की सर्दी पड़ती है। हेमंत समाप्त होने पर पतझड़ आरंभ होती है। इसमें वृक्षों के पुराने पत्ते झड़ते हैं। ठंड विदा होती है। इस प्रकार भारत में षड्ऋतुओं का यह चक्र हर साल अपनी रंगीनियाँ बिखेरता हुआ हर साल आता है।